



# दीपावली पूजन विधि

मनुष्य के जीवन में उत्सवों का बड़ा महत्त्व है। उन पर्वों में दीपावली पर्व भारत वर्ष का एक श्रेष्ठतम पर्व है। दीपावली दीपोत्सव का, प्रकाशोत्सव का पर्व है। शक्ति, भक्ति और श्रद्धा का पर्व है। दीपक की शुभ ज्योति हमें ऊर्ध्वगमन का शुभ संदेश देती है, साथ ही अपने सान्निध्य में आनेवाले हर दीप को ही नहीं हर बुझे दीप को भी प्रकाशित करने का संदेश देती है। दीप से दीप जलते जाते हैं और दीपमाला बनकर दीपावली बन जाती है।

यह पर्व मानव जीवन की पूर्णता और उसकी सार्थकता को जानने-समझने का पर्व है। हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है, जो ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है। ज्ञान ही संसार में सबसे बड़ा एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकाश है। जब ज्ञान का दीप जलता है, तब भीतर और बाहर दोनों ओर आलोक जगमगाता है।

प्रभु महावीर के इस निर्वाण पर्व दीपावली के उपलक्ष में हम अहिंसा के दीप जलाये, मैत्री का प्रकाश फैलाये और आपस में प्रेमभाव बढ़ाने का प्रयास करें।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था। वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए। चतुर्दशी और अमावस्या ये दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे। वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है। जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है। कई महानुभाव बड़ी श्रद्धा के साथ उपवास करते हैं। भ. महावीर का जाप करते हैं। पौष्टि के साथ उपवास करते हैं।

कार्तिक सूट प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। नए वर्ष के प्रातःकाल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है।

सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवांतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते हैं। मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है। – संपादक

## दीपावली पूजन विधि

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे।

### नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,  
णमो उवज्ञायाणं, णमो लोए सब्वसाहूणं,  
एसो पंच णमोक्कारो, सब्वपावप्पणासणो,  
मंगलाणं च सब्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

### तीर्थकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थकर वर्तमान में विराजमान है अतः अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें।

### गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रद्धापूर्वक वंदना करना।

- शुभ मुहूर्त पर गदी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें।
- गदीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें।
- पूजा के लिए साहित्य – खाने के पान डंडल सहित,

## ॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ **ॐ** श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः श्री शांतिनाथाय नमः

श्री पार्श्वनाथाय नमः श्री महावीराय नमः

श्री सदगुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋष्टि,  
श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजी का सौभाग्य,  
श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल,  
तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ति प्राप्त होवे !

श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

**नूतन वर्ष**

वीर संवत् २५५०, विक्रम संवत् २०८०

कार्तिक सुद १ मंगलवार दि. १४ नोव्हेंबर २०२३

पूजन दिन रविवार दि. १२ नोव्हेंबर २०२३



सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप, अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल (Fruit), ईख (Sugar cane), नैवद्य (मिठाई), लक्ष्मी (झाड़ु), लाभ (लाहौ) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।

- पूजा करनेवाला घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बार्यां तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खड़ा रखें ।
- नवकार मंत्र बोलते-बोलते पेन, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम से तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्ने पर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाउंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंडल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।

मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।

मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूदीपे  
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे–भारतदेशे (पूना) नगरे

ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी

आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,  
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।  
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,

मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।  
 अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,  
 एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः।  
 हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्  
 परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।  
 मंत्रणामादिमं मंत्रं, तत्र विघ्नौघ निग्रहे,  
 ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ॥  
 तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते जल,  
 चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल,  
 नैवेद्य इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ न्हौं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै,  
 लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं)  
 समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह  
 चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर  
 आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित  
 प्रार्थना बोलें ।

### ॥ श्री सरस्वती स्तोत्र ॥

सकल लोक सुसेवित पंकजा  
 वर यशोर्जित शारद कौमुदी,  
 निखिल कल्पष नाशन तत्परा  
 जयतु सा जगतां जननी सदा ॥  
 कमल गर्भ विराजित भूधना,  
 मणि किरीट सुशोभित मस्तका,  
 कनक कुंडल भूषित कर्णिका,  
 जयतु सा जगतां जननी सदा ॥  
 वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी  
 विधृत सोमकला जगदीश्वरी,  
 जलज पत्र समान विलोचना  
 जयतु सा जगतां जननी सदा ॥  
 निज सुधैर्य जितामर भूधरा,  
 निहित पुष्कर वृदल सत्कारा  
 समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,  
 जयतु सा जगतां जननी सदा ॥  
 विविध वांछित कामदुधादभूता,

विशद पद्म हृदान्तर वासिनी  
 सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,  
 जयतु सा जगतां जननी सदा ॥  
 ॥ श्री लक्ष्मी स्तोत्र ॥  
 नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी  
 सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ॥ १ ॥  
 धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयुः यशः श्रियम्  
 वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ॥ २ ॥  
 यन्मया वांछित देवी, तत्सर्व सफलं कुरु  
 न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ॥ ३ ॥

### ॥ प्रार्थना ॥

सुंदर आरोग्य निवास करे दूढ तन में ।  
 आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।  
 न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।  
 उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।  
 तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।  
 प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से  
 आरती करे - निम्न आरती बोले ।

### ॥ आरती ॥

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।  
 सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरु पसाय ॥  
 ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।  
 ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ॥  
 श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।  
 ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ॥  
 श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।  
 पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ॥  
 अष्टमपद विशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।  
 तीर्थकर पदवी लहे, आराधक भगवान ॥

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

### ॥ अष्टदोहे ॥

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।  
 जय गुरु गौतम समरिये, वांछित फल दातार ॥ १ ॥  
 प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।  
 चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ॥ २ ॥

भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपि जयकार ।  
 लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ॥३॥  
 वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।  
 अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ॥४॥  
 केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।  
 सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ॥५॥  
 सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाम ।  
 नान थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ॥६॥  
 ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।  
 वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ॥७॥  
 गुरु गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।  
 भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ॥८॥

॥ लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मातिथ्यरे जिणे ।  
 अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥  
 उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमङं च।  
 पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥  
 सुविहिं च पुण्फदंतं, सीयल सिजंच वासुपुज्जं च।  
 विमलमण्टं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥  
 कुंथुं अरं च मळि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।  
 वंदामि रिटुनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ॥४॥  
 एवं मए अभित्थुआ, विह्यरयमला पहीणजरमरणा।  
 चउवीसंपि जिणवरा. तिथ्यरा में पसीयंतु ॥५॥  
 कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।  
 आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥  
 चंदेसु निमलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।  
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

॥ नमोत्थुणं का पाठ ॥ (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवताणं, आडगराणं,  
 तिथ्यराणं, संय-संबुद्धाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-  
 सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-  
 हृथीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं,  
 लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं,  
 चक्रखुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं,  
 बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं,

धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-  
 चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपट्टाणं, अप्पडिह्य  
 वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं  
 जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं  
 मोयगाणं, सव्वव्वूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-  
 मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-  
 सिद्धिगड-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं  
 जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो  
जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स  
धम्मोवदेसयस्स अणोगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ  
कामस्स ।

॥ मंगलपाठ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू  
 मंगलं, केवलिपण्णतो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा,  
 अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,  
 केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि,  
 अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि,  
 साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णतधम्मं सरणं  
 पव्वज्जामि । अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा,  
 साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा ।  
 चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो  
 भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।  
 श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार ।  
 भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।  
 भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।  
 पावे पद निर्वाण ॥  
 यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है ।

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण  
 दिन है अतः भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-  
 मन को एकाग्र कर, रात्रि में निम्न जप की २०-२०  
 मालाएँ जपें ।

ॐ न्हीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नमः  
 बादमें  
 ॐ न्हीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः  
 की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जप करें।  
 कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि  
 के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और  
 ॐ न्हीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नमः  
 २० माला करें।  
 फिर यह प्रार्थना बोले...  
 कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना  
 सरोज हृथा कमले निसन्ना

वाएसिरी पुत्थय वग हत्थ  
 सुहायसा अम्ह सया पसथा  
 इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी  
 मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)  
 ॐ न्हीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक, उपाश्रय में जाकर प्रभु का,  
 संतों का दर्शन करें। मांगलिक श्रवण करें। गौतम  
 स्वामी को मध्यरात्रि के बाद भली सुबह केवलज्ञान  
 प्राप्त हुआ अतः उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें।  
 दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें।  
 सबका भला हो, मंगल हो, कल्याण हो। •



## सन २०२३ चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त



- ❖ **पृष्ठ नक्षत्र :** अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ७  
 शनिवार दि. ४-११-२०२३ : \* सकाळी ८.३० ते ९.०० शुभ \* दुपारी १२.३० ते २ चल,  
 \* २.०० ते ३.३० लाभ, \* ३.३० ते ५.०० अमृत  
 \* सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ \* रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ  
 रविवार दि. ५-११-२०२३ : \* सकाळी ८.०० ते ९.३० चल \* ९.३० ते १०.३० लाभ
- ❖ **धनत्रयोदशी :** (धनतेरस) अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद १३  
 शुक्रवार दि. १०-११-२०२३ : \* दुपारी १२.४० ते २.०० शुभ  
 \* सायंकाळी ५.०० ते ६.३० चल, रात्री ९.३० ते ११.०० लाभ  
 शनिवार दि. ११-११-२०२३ : \* सकाळी ८.०० ते ९.०० शुभ
- ❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) :** अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ३०  
 रविवार दि. १२-११-२०२३ : \* दुपारी २.४५ ते ३.३० शुभ, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० शुभ  
 \* ८.०० ते ९.३० अमृत, ९.३० ते ११.०० चल.  
 \* वृषभ लघु कुंभ नवमांश - सायंकाळी ६.२४ ते ६.३५  
 \* वृषभ लघु वृषभ नवमांश - सायंकाळी ७.०१ ते ७.१४
- ❖ **नूतन वर्ष :** (वीर संवत् २५५०, विक्रम संवत् २०८०) कार्तिक शुद्ध १  
 मंगलवार दि. १४-११-२०२३ : \* सकाळी ९.३० ते ११ चल \* ११.०० ते १२.३० लाभ  
 \* दुपारी १२.३० ते २.०० अमृत  
 श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शाह - २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९



**दीपावली व नूतन वर्षाच्या ह्यार्दिक शुभेच्छा !**

**जैन जागृति - चोरडिया परिवार**



**जैन जागृति जाहिरात व वर्गणी साठी संपर्क - 8262056480**